शोधामृत
(कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका)

ISSN : 3048-9296 (Online)
3049-2890 (Print)
IIFS Impact Factor-4.0
Vol.-3; issue-1 (Jan.-March) 2026
Page No- 82-84
©2026 Shodhaamrit
https://shodhaamrit.gyanvividha.com

Author's :

फतेहचन्द चौहान
सहायक आचार्य संस्कृत,
राजकीय महाविद्यालय खाजूवाला,
बीकानेर, एवं शोधार्थी मानविकी संकाय,
संस्कृत विभाग (MLSU Udaipur).

Corresponding Author :

फतेहचन्द चौहान
सहायक आचार्य संस्कृत,
राजकीय महाविद्यालय खाजूवाला,
बीकानेर, एवं शोधार्थी मानविकी संकाय,
संस्कृत विभाग (MLSU Udaipur).

संस्कृतानुरागी अम्बेडकर ; (अम्बेडकर चरित संस्कृतकाव्यों के विशेष आलोक में)

शोध सार :- बाबा साहब डॉ. भीमराव अम्बेडकर को सामाजिक न्याय, सामाजिक समता एवं दलित चेतना के अग्रदूत के रूप में जाना जाता है उनके व्यक्तित्व का एक पक्ष संस्कृत भाषा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण भी है। बाबा साहब अम्बेडकर ने व्यक्तिगत अथवा सामाजिक हितों की अपेक्षा राष्ट्र-हित को सदैव प्राथमिकता दी। निःसन्देह उन्होंने संस्कृत धर्म ग्रंथों के अनेक अंशों की आलोचना की परन्तु उनकी इस आलोचना का आधार भाषा-आधारित न होकर सामाजिक भेदभाव पर आधारित था अम्बेडकर यह भी चाहते थे कि जिस भाषा को जानने पढ़ने के कारण सवर्ण अपने आप को उच्च समझते हैं वह भाषा वर्ग-विशेष की भाषा ना रहकर सर्व सामान्य की भाषा बने।

Key words :- संस्कृत, डॉ. भीमराव अम्बेडकर, अम्बेडकरदर्शनम्, भीमायनम्।

प्रस्तावना :- हिन्दू धर्म में व्याप्त सामाजिक असमानता एवं शास्त्रोक्त वर्णव्यवस्था का विरोध करने एवं मनुस्मृति दहन का समर्थन करने के कारण कई लोग यह मिथ्या धारणा बना लेते हैं कि अम्बेडकर संस्कृत विरोधी थे परंतु अम्बेडकर के जीवन का एक विशेष पक्ष यह भी है कि बाल्यकाल से हि संस्कृतानुरागी थे। विद्यालय में शिक्षा अर्जन के समय संस्कृत विषय के अध्ययन की रुचि प्रकट की थी परन्तु संस्कृत के अध्यापक ने उन्हें संस्कृत पढ़ाने से मना कर दिया जिसके कारण उन्हें वैकल्पिक विषय के रूप में संस्कृत के स्थान पर फारसी भाषा का अध्ययन करना पड़ा क्योंकि उनके विद्यालय में वैकल्पिक रूप से फारसी अथवा संस्कृत में से एक विषय चयन करना होता था बाल्यकाल से ही संस्कृत से प्रति उनकी जिज्ञासा थी अतः उच्च अध्ययन के पश्चात उन्होंने संस्कृत भाषा का ज्ञान प्राप्त किया उनके संस्कृत का महान विद्वान होने के प्रमाण उनके अपने ग्रंथों में प्राप्त होते हैं जिनमें वे संस्कृत धर्म ग्रंथों में वर्णित सामाजिक असमानता को अपने अकाट्य तर्कों को विश्लेषण करते हैं।

संस्कृतानुरागी अम्बेडकर :- आधुनिक संस्कृत साहित्य में अम्बेडकरचरित संस्कृत काव्य उनके संस्कृतानुरागी एवं संस्कृत के विद्वान होने की पुष्टि करते हैं। अम्बेडकरदर्शनम् महाकाव्य में द्वितीय

सर्ग में इसी कथन की और अधिक पुष्टि करते हुए कहा गया है कि -

अहं संस्कृतभाषयामनुभवामि गौरवम्।
अकामयं महाविज्ञो भवेयं संस्कृतस्य वै।।
परं विप्रगुरोश्चैवं संकीर्णभावहेतुना।
अहं संस्कृतभाषाया: पण्डितो नाभवं तदा ।।[1]

अर्थात् अम्बेडकर स्वयं कहते हैं कि मुझे संस्कृत भाषा के प्रति गौरव का अनुभव होता है मेरी इच्छा थी कि मैं भी संस्कृत का विद्वान बनूं परंतु संस्कृत अध्यापक की संकीर्ण भावना के कारण मुझे संस्कृत के अध्ययन से वंचित होना पड़ा।

शान्तिभिक्षु शास्त्री भीमाम्बेडकरशतकम् में कहते हैं कि अम्बेडकर ने अपनी बुद्धि एवं स्वाध्याय से संस्कृत भाषा में नैपुण्य प्राप्त किया भीम: स्वेन प्रयत्नेन स्वबुद्ध्या संपरिष्कृत :।
श्रेष्ठ : सिद्धों हि भाषायां तस्यां निपुणतां गत :।।[2]

अर्थात् अम्बेडकर ने अपनी मेधाशक्ति एवं स्वाध्याय से संस्कृत भाषा में निपुणता प्राप्त की।
अम्बेडकर चाहते थे कि संस्कृत भाषा भारतीय संघ की आधिकारिक भाषा बने इसके लिए उन्होंने ऑल इंडिया शेड्यूलकास्ट फेडरेशन की कार्यकारी सभा में संस्कृत के महत्व को रेखांकित करते हुए प्रस्ताव प्रस्तुत किया। इसका उल्लेख करते हुए भीमायनम् महाकाव्य के अष्टादश सर्ग में कवि कहते हैं कि -

दलित-महा-संघस्य च कार्यसभायां तदा भीमरायः ।
प्रस्तावोपन्यासं कृतवान् गीर्वाण-वाग्विषयम् ।।[3]

अर्थात् – दलित महासंघ की कार्यकारी सभा में अम्बेडकर ने संस्कृत को भारतीय संघ की आधिकारिक भाषा बनाने का प्रस्ताव प्रस्तुत किया। संस्कृत-वाङ्-माहात्म्यं विशदीकुर्वंस्तदा भीमरायः ।
प्रोवाच, "संस्कृता वाक् भारतीय-संस्कृतेर्मूलम् ।।[4]

संस्कृत भाषा के महत्व को केन्द्रीकृत करते हुए अम्बेडकर कहते हैं कि संस्कृत भाषा भारत और भारतीय संस्कृति का मूल है। नैक-गिरां प्रसवित्री, भिन्न-प्रान्तीय-भारतीयानाम् ।
मान्या सदैव विदुषाम् अर्हति नो राष्ट्र-भाषात्वम् ।।"[5]

अनेक भाषाओं की जननी और भिन्न भिन्न प्रांतों में भारतीयों के लिए सर्वमान्य भाषा के रूप में संस्कृत भारतीय संघ की आधिकारिक भाषा होनी चाहिए। परन्तु उनके कई युवा सहयोगियों ने इस प्रस्ताव का विरोध किया जिसके कारण उन्हें यह निरस्त करना पड़ा। वस्तुत: इसके पीछे अम्बेडकर की दूरगामी सोच थी वह इस बात को भली-भांति समझ चुके थे की भाषाई आधार पर राज्यों का विभाजन भविष्य में भारतीय संघ के लिए बड़े संकट का कारण बन सकता है गैर हिन्दी भाषी राज्य आज भी हिन्दी का दबे स्वर में विरोध करते हैं इसलिए उनका विचार था कि अगर संस्कृत भाषा को आधिकारिक भाषा अथवा राजभाषा का दर्जा प्राप्त हो जाता है तो यह पूरे भारतीय संघ को एक सूत्र में बाँधे रख सकती है।

संविधान सभा में भाषा नीति पर बहस के दौरान लक्ष्मीकांत मैत्रा के द्वारा भारतीय संघ की राष्ट्र भाषा हिन्दी के स्थान पर संस्कृत को बनाने का प्रस्ताव पेश किया गया तब अम्बेडकर भी उनके प्रमुख समर्थकों में थे। उनके अनुसार राष्ट्र भाषा का दर्जा उस भाषा को दिया जाना चाहिए जो किसी प्रदेश विशेष की भाषा ना हो क्योंकि दक्षिण भारत के प्राय: सभी प्रतिनिधि हिन्दी का विरोध कर रहे थे और संस्कृत भाषा भारत को एक सूत्र में बांधने का सामर्थ्य रखती थी। लक्ष्मीकांत मैत्रा ने जिज्ञासा से संसद की कार्यवाही के दौरान हि संस्कृत भाषा में कुछ पूछा तो प्रत्युत्तर में अम्बेडकर ने भी संस्कृत भाषा में वार्तालाप करते हुए उनके प्रश्नों के उत्तर दिए। अगले दिन प्रमुख अखबारों ने प्रस्ताव के समर्थकों में अम्बेडकर और उनके संस्कृत वार्तालाप को प्रमुखता से छापा था। इसी की पुष्टि करते हुए प्रभाकर शंकर जोशी कहते हैं कि –

कश्चित्संसद-मुख्यैः 'संस्कृत-वाग् भवतु राष्ट्र-भाषेति।'
प्रस्ताव उपन्यस्तो भीमस्तेषामभूत् प्रमुखः।।[6]

किसी सांसद के द्वारा यह प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया कि देववाणी संस्कृत भारत की राष्ट्र भाषा हो उनके इस प्रस्ताव के प्रमुख समर्थकों में अम्बेडकर भी अन्यतम थे।

मैत्रोपनाम-विद्वान ज्ञातुं भीमस्य संस्कृत-ज्ञानम्।
पप्रच्छ भीमरायं संस्कृत-वाण्यैव निज-शङ्काः।।[7]

लक्ष्मीकांत मैत्रा ने अम्बेडकर के संस्कृत ज्ञान को जानने की इच्छा से संस्कृत भाषा में कुछ पूछा तब अम्बेडकर ने संस्कृत भाषा में हि उनका प्रत्युत्तर दिया। और यह वृतांत अगले दिन अखबारों में प्रमुखता से छपा था।

वस्तुत: अम्बेडकर भाषायी आधार पर राज्यों के वर्गीकरण के विरोध में थे क्योंकि भारत बहु भाषा-भाषी देश है जहां भाषा के आधार पर राज्य बनाने से भविष्य में भारतीय संघ के लिए विकट स्थिति उत्पन्न हो सकती थी। अम्बेडकर यह भी चाहते थे कि जिस भाषा को जानने पढ़ने के कारण सवर्ण अपने आप को उच्च समझते हैं वह भाषा वर्ग-विशेष की भाषा ना रहकर सर्व सामान्य की भाषा बने। इस प्रकार सभी तथ्यों के विश्लेषण के आधार पर हम कह सकते हैं कि संस्कृत के प्रति अम्बेडकर की अनन्य श्रद्धा थी वे उसे आधिकारिक भाषा के रूप में मान्यता दिलाकर उसे सर्व-सामान्य की भाषा बनाने के पक्षधर थे और भाषायी आधार पर राज्यों के विघटन का स्थाई समाधान के रूप में देखते थे।

डॉ. भीमराव अम्बेडकर द्वारा संस्कृत को संभावित राजभाषा के रूप में देखने का विचार उनके व्यापक राष्ट्रबोध, ऐतिहासिक चेतना और सामाजिक न्याय की प्रतिबद्धता से जुड़ा हुआ था। यह धारणा किसी प्रकार की सांस्कृतिक रुढ़िवादिता या अतीत-पूजा पर आधारित नहीं थी, बल्कि वह भारत की बहुभाषिक वास्तविकता से उत्पन्न भाषायी संघर्षों का एक संतुलित और दूरदर्शी समाधान प्रस्तुत करती है। अम्बेडकर के लिए राजभाषा का प्रश्न केवल प्रशासनिक सुविधा का नहीं, बल्कि राष्ट्रीय एकता, समानता और राजनीतिक निष्पक्षता का प्रश्न था। अम्बेडकर यह भी स्पष्ट करते हैं कि संस्कृत को राजभाषा के रूप में अपनाने का अर्थ उसे यथावत्, शास्त्रीय और कठिन रूप में लागू करना नहीं है। वे इसके आधुनिकीकरण, सरलीकरण और लोकतंत्रीकरण के पक्षधर थे। उनका मानना था कि यदि संस्कृत को आधुनिक विज्ञान, प्रशासन और शिक्षा की आवश्यकताओं के अनुरूप विकसित किया जाए, तो वह एक व्यवहारिक भाषा का रूप भी ग्रहण कर सकती है। इस प्रक्रिया में संस्कृत को पुरोहिती वर्चस्व से मुक्त करना अनिवार्य था।

निष्कर्ष :- इस प्रकार, संस्कृत को राजभाषा के रूप में देखने की अम्बेडकर की अवधारणा किसी प्रकार का सांस्कृतिक आग्रह नहीं, बल्कि एक गहन राजनीतिक और नैतिक प्रस्ताव थी। यह प्रस्ताव भारत की भाषायी विविधता को नकारता नहीं, बल्कि उसे एक ऐसे साझा बौद्धिक मंच से जोड़ने का प्रयास करता है, जहाँ भाषा सत्ता का नहीं, बल्कि समानता और संवाद का माध्यम बने। संविधान सभा में भाषा का प्रश्न अत्यंत संवेदनशील था। हिंदी, उर्दू और क्षेत्रीय भाषाओं के बीच टकराव की स्थिति थी। ऐसे में अम्बेडकर ने संस्कृत को एक तटस्थ और अखिल-भारतीय विकल्प के रूप में देखा। इस प्रकार सभी तथ्यों के विश्लेषण के आधार पर हम कह सकते हैं कि संस्कृत के प्रति अम्बेडकर की अनन्य श्रद्धा थी वे उसे आधिकारिक भाषा के रूप में मान्यता दिलाकर उसे सर्व-सामान्य की भाषा बनाने के पक्षधर थे।

सन्दर्भ सूची :

1. बलदेवसिंह मेहरा :अम्बेडकरदर्शनम्, देवेश पब्लिकेशन्स,रोहतक,2009 पृ.सं -11
2. शान्तिभिक्षु शास्त्री :भीमाम्बेडकरशतकम्, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली, 2012 पृ.सं.29
3. प्रभाकर शंकर जोशी :भीमायनम्, शारदा गौरव ग्रन्थ माला, पुणे, पृ.सं -128
4. प्रभाकर शंकर जोशी :भीमायनम्, शारदा गौरव ग्रन्थ माला, पुणे, पृ.सं -128
5. प्रभाकर शंकर जोशी :भीमायनम्, शारदा गौरव ग्रन्थ माला, पुणे, पृ.सं -128
6. प्रभाकर शंकर जोशी :भीमायनम्, शारदा गौरव ग्रन्थ माला, पुणे, पृ.सं -129
7. प्रभाकर शंकर जोशी :भीमायनम्, शारदा गौरव ग्रन्थ माला, पुणे, पृ.सं -129

•